(श्लोक-१६)

कर्म और अकर्मको तत्त्वसे जाननेका फ

किं कर्म किमकर्मेति कवयोऽप्यत्र मोहिताः।
तत्ते कर्म प्रवक्ष्यामि यज्ज्ञात्वा मोक्ष्यसेऽशुभात्॥

कर्म क्या है? और अकर्म क्या है?—इ प्रकार इसका निर्णय करनेमें बुद्धिमान् पुरु भी मोहित हो जाते हैं। इसलिये वह कर्मतत्त मैं तुझे भलीभाँति समझाकर कहूँगा, जि जानकर तू अशुभसे अर्थात् कर्मबन्धनसे मुक्त हो जायगा॥ १६॥

(श्लोक-१७)

कर्म, अकर्म और विकर्मके स्वरूपको जाननेके लिये प्रेरणा

कर्मणो ह्यपि बोद्धव्यं बोद्धव्यं च विकर्मणः।

अकर्मणश्च बोद्धव्यं गहना कर्मणो गतिः ॥

कर्मका स्वरूप भी जानना चाहिये और अकर्मका स्वरूप भी जानना चाहिये तथा विकर्मका स्वरूप भी जानना चाहिये; क्योंकि कर्मकी गति गहन है ॥ १७ ॥

(श्लोक-१८)

कर्ममें अकर्म और अकर्ममें कर्मको तत्त्वसे जाननेका फल

कर्मण्यकर्म यः पश्येदकर्मणि च कर्म यः ।
स बुद्धिमान्मनुष्येषु स युक्तः कृत्स्नकर्मकृत् ॥

जो मनुष्य कर्ममें अकर्म देखता है और जो अकर्ममें कर्म देखता है, वह मनुष्योंमें

बुद्धिमान् है और वह योगी समस्त कर्मोंव
करनेवाला है॥ १८॥

(श्लोक-१९)

कामना और संकल्परहित आचरणवाले ज्ञानीकी प्रशंसा

यस्य सर्वे समारम्भाः
कामसङ्कल्पवर्जिताः।
ज्ञानाग्निदग्धकर्माणं तमाहुः पण्डितं
बुधाः॥

जिसके सम्पूर्ण शास्त्रसम्मत कर्म बि
कामना और संकल्पके होते हैं तथा जिसव
समस्त कर्म ज्ञानरूप अग्निके द्वारा भस्म ह
गये हैं, उस महापुरुषको ज्ञानीजन भी पण्डि
कहते हैं॥ १९॥

(श्लोक-२०)

फलासक्तिको त्यागकर कर्म करनेवालेकी प्रशंसा

त्यक्त्वा कर्मफलासङ्गं नित्यतृप्तो निराश्रयः।
कर्मण्यभिप्रवृत्तोऽपि नैव किञ्चित्करोति सः॥

जो पुरुष समस्त कर्मोंमें और उनके फलमें आसक्तिका सर्वथा त्याग करके संसारके आश्रयसे रहित हो गया है और परमात्मामें नित्य तृप्त है, वह कर्मोंमें भलीभाँति बर्तता हुआ भी वास्तवमें कुछ भी नहीं करता॥ २०॥